

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 8: नारायण-कवच

14 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



ऋषि विश्वरूप इन्द्र को नारायण-कवच प्रदान करते हैं — प्रार्थना का वह पवित्र कवच जिसके द्वारा भक्त, भगवान् के प्रत्येक नाम, रूप और अवतार का स्मरण करते हुए, प्रत्येक स्थान, प्रहर और संकट में सुरक्षित रहता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

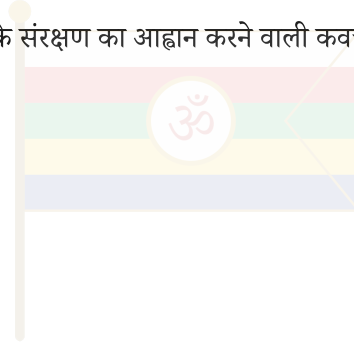
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। षष्ठ स्कन्ध का आठवाँ अध्याय समस्त शास्त्र की सर्वाधिक प्रिय रक्षक प्रार्थनाओं में से एक है — नारायण-कवच, “नारायण का कवच।” यह सुनकर कि इन्द्र ने किस प्रकार स्वर्ग पुनः जीता, राजा परीक्षित उसी प्रार्थना को सीखने की प्रार्थना करते हैं जिसने उनकी रक्षा की। उत्तर में, ऋषि विश्वरूप

शरण की एक सम्पूर्ण साधना उद्धाटित करते हैं: शरीर और मन की तैयारी, और फिर एक व्यापक आह्वान जिसमें भगवान् को, उनके प्रत्येक अवतार में, भक्त की जल में, थल में और आकाश में, दिन और रात के प्रत्येक विभाग में, और प्रत्येक दृष्ट-अदृष्ट संकट के विरुद्ध रक्षा करने के लिए पुकारा जाता है। यह एक ऐसी प्रार्थना है जो अपनी सुरक्षा का समस्त भार अपनी शक्ति पर नहीं, अपितु परमेश्वर के नामों, रूपों और अस्त्रों पर रखती है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 8 (अष्टम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: नारायण-कवच
- मुख्य वक्ता: विश्वरूप, इन्द्र को सिखाते हुए; श्रीशुकदेव द्वारा राजा परीक्षित को सुनाया गया
- मुख्य श्रोता: कथा के भीतर इन्द्र; बाह्य कथा में राजा परीक्षित; नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: स्वर्ग की सभा, जहाँ विश्वरूप इन्द्र को यह पवित्र प्रार्थना प्रदान करते हैं
- केन्द्रीय विषय: नारायण-कवच — अपने समस्त रूपों में भगवान् नारायण के संरक्षण का आह्वान करने वाली कवच-प्रार्थना
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 8, श्लोक 1-42
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



राजा परीक्षित की प्रार्थना

राजा परीक्षित ऋषि से उस प्रार्थना को सिखाने की प्रार्थना करते हैं, जो नारायण के भाव से ओतप्रोत है, जिसके द्वारा सुरक्षित होकर सहस्राक्ष इन्द्र ने शत्रु की सेनाओं को खेल-खेल में पराजित किया और तीनों लोकों के वैभव का उपभोग किया — और किस प्रकार, उस कवच से सुरक्षित होकर, उन्होंने युद्ध में अपने प्राण लेने आए शत्रुओं को जीता (श्लोक 1-2)।

श्रीराजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान् ।

क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् ॥ १ ॥

भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम् ।

यथाततायिनः शत्रून्येन गुप्तोऽजयन्मृधे ॥ २ ॥

*śrī-rājovāca yayā guptaḥ sahasrākṣaḥ savāhān ripu-sainikān krīḍann iva vinirjitya tri-lokyā
bubhuje śriyam bhagavaṁs tan mamākhyāhi varma nārāyaṇātmakam yathātataīyinaḥ śatrūn
yena gupto 'jayan mṛdhe*

अर्थ: राजा परीक्षित ने कहा: मुझे उस कवच के विषय में बताइए, जो नारायण के भाव से ओतप्रोत है, जिससे सुरक्षित होकर सहस्राक्ष इन्द्र ने शत्रु की सेनाओं और उनके वाहनों को खेल के समान पराजित करके तीनों लोकों के वैभव का उपभोग किया, और जिससे सुरक्षित होकर उन्होंने युद्ध में अपने प्राण लेने आए शत्रुओं को जीता। (स्कन्ध 6, अध्याय 8, श्लोक 1-2)

भक्त की तैयारी

श्रीशुकदेव बताते हैं कि पुरोहित नियुक्त विश्वरूप ने प्रार्थनानुसार कवच सिखाया। ऋषि तैयारी के अनुशासन से आरम्भ करते हैं: संकट के समय, जिसने अपने शुद्धिकरण के कृत्य पूर्ण कर लिए हों, वह हाथ-पैर धोए, भगवान् के नामों सहित जल का आचमन करे, और पवित्र कुश की पवित्री धारण करके, मौन रूप से न्यास करे — वह संस्कार जिसके द्वारा पवित्र मन्त्रों के अक्षर शरीर के अंगों में स्थापित किए जाते हैं, जिनमें बारह-अक्षर मन्त्र ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हाथों की अंगुलियों और पर्वों पर स्थापित किया जाता है, जिससे भक्त का शरीर ही पवित्र नाम का पात्र बन जाए (श्लोक 3-10)। तत्पश्चात्, परमात्मा का ध्यान करते हुए, जो समस्त दिव्य गुणों से पूर्ण रूप से सम्पन्न हैं, उपासक प्रार्थना को ग्रहण करता है (श्लोक 11)। इस विधि के नीचे शिक्षा सरल और गूढ़ है: रक्षा माँगने से पूर्व, हम उसे ग्रहण करने के लिए स्वयं को तैयार करते हैं, शरीर और मन को पवित्र करके और उन्हें पूर्णतः भगवान् की ओर मोड़कर।



देवों के पुरोहित नियुक्त होकर, ऋषि विश्वरूप इन्द्र को नारायण-कवच की पवित्र साधना सिखाते हैं, शरीर और मन के पवित्रीकरण से आरम्भ करते हुए (श्लोक 3-11)।

गरुड पर विराजमान अष्टभुज भगवान् की शरण

शरीर और मन को इस प्रकार पवित्र करने के पश्चात्, भक्त कवच का आरम्भ स्वयं भगवान् पर हृदय स्थिर करके करता है, जो पक्षिराज गरुड की पीठ पर विराजमान हैं और उन पर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं। भगवान् अपनी आठ भुजाओं में आठ अस्त्र धारण करते हैं — शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश — और आठों योग-सिद्धियों से पूर्ण वे सदा रक्षा हेतु प्रार्थित किए जाते हैं। किसी एक संकट का नाम लिए जाने से पूर्व ही समस्त प्रार्थना यहीं आधारित हो जाती है: भक्त पहले अपना कोई शस्त्र नहीं उठाता, अपितु प्रत्येक अस्त्र के सर्वशक्तिमान् धारक की शरण लेता है, अपनी सुरक्षा का समस्त भार स्वयं भगवान् पर रखते हुए (श्लोक 12)।

ॐ हरिविदध्यान्मम सर्वरक्षां
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे ।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप-
पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ॥ १२ ॥

*om harir vidadhyān mama sarva-rakṣāṁ nyastāṅghri-padmaḥ patagendra-prṣṭhe darāri-
carmāsi-gadeṣu-cāpa-pāśān dadhāno 'ṣṭa-guṇo 'ṣṭa-bāhuḥ*

अर्थ: जो श्रीहरि पक्षिराज गरुड की पीठ पर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं और अपनी आठ भुजाओं में शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष तथा पाश धारण करते हैं, वे मुझे पूर्ण रक्षा प्रदान करें; आठों सिद्धियों से सम्पन्न वे सर्वशक्तिमान् भगवान् सब ओर से मेरी रक्षा करें। (स्कन्ध 6, अध्याय 8, श्लोक 12)

भक्त के रक्षक — भगवान् के अवतार

तत्पश्चात् प्रार्थना का हृदय आता है: भगवान् को उनके प्रत्येक अवतार में प्रत्येक स्थान पर भक्त की रक्षा हेतु पुकारना। मत्स्यरूपधारी भगवान् जल के भीषण जीवों तथा वरुण के फंदे से मेरी रक्षा करें; बौने वामन बनकर प्रकट हुए भगवान् थल पर मेरी रक्षा करें, और जिन्होंने तीन पगों में समस्त ब्रह्माण्ड को नाप लिया, वे त्रिविक्रम आकाश में मेरी रक्षा करें (श्लोक 13)। हिरण्यकशिपु के संहारक नृसिंह, जिनकी गर्जना प्रत्येक दिशा में गूँजती है, मुझे वन और युद्ध के अग्रभाग जैसे भयपूर्ण स्थानों में रक्षा करें; जिन्होंने पृथ्वी को अपनी दाढ़ पर उठाया, वे दिव्य वराह मुझे मार्ग के ठगों से रक्षा करें; परशुराम मुझे पर्वत-शिखरों पर रक्षा करें, और भरत के अग्रज राम लक्ष्मण सहित हमें परदेश में रक्षा करें (श्लोक 14-15)।

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति-
र्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात् ।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्
त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ॥ १३ ॥

*jaleṣu māṁ rakṣatu matsya-mūrtir yādo-gaṇebhyo varuṇasya pāśāt sthaleṣu māyāvaṭu-vāmano
vyāt trivikramaḥ khe vatu viśvarūpaḥ*

अर्थ: भगवान् अपने मत्स्य रूप में मुझे जल में गहराई के प्राणियों और वरुण के पाश से रक्षा करें; जो भगवान् वामन रूप में प्रकट हुए वे मुझे थल में रक्षा करें, और जिनका रूप स्वयं ब्रह्माण्ड है, वे त्रिविक्रम मुझे आकाश में रक्षा करें। (स्कन्ध 6, अध्याय 8, श्लोक 13)

प्रार्थना भगवान् के अनेक रूपों से आगे बढ़ती है — ऋषि नारायण मिथ्या और हानिकारक धर्म से बचाते, नर अभिमान से, दत्तात्रेय योग-साधना की चूक से, और कपिल सकाम कर्म के बन्धन से; सनत्कुमार काम से रक्षा करते, हयग्रीव भगवान् को प्रणाम न करने के अपराध से, नारद देव-पूजा की त्रुटियों से, और दिव्य कच्छप कूर्म नरक में गिरने से; ऋषभ द्वन्द्वों के भय से, धन्वन्तरि अपथ्य भोजन और रोग से, यज्ञ लोक-निन्दा और

हानि से, और शेष-रूप बलराम ईर्ष्यालु सर्पों से; वेदव्यास वेद-ज्ञान से रहित के अज्ञान को दूर करते, बुद्ध वेद-विरुद्ध कर्मों से बचाते, और धर्म के स्वामी कल्कि कलियुग की अशुद्धियों से रक्षा करें (श्लोक 16-19)।



भक्त प्रत्येक ओर से भगवान् के अवतारों द्वारा सुरक्षित रहता है — जल में मत्स्य, थल में वामन, आकाश में त्रिविक्रम, और मार्ग में वराह (श्लोक 13-15)।

प्रत्येक प्रहर में रक्षा

तत्पश्चात् कवच अपनी शरण को समस्त काल-चक्र पर फैला देता है। केशव प्रातःकाल में मेरी रक्षा करें, गोविन्द अगले प्रहरों में, नारायण पूर्वाह्न में, और सुदर्शनधारी विष्णु मध्याह्न में; मधुसूदन अपराह्न में और माधव सन्ध्याकाल में; हृषीकेश रात्रि के प्रथम प्रहर में और पद्मनाभ गहन रात्रि में रक्षा करें; श्रीवत्सधारी भगवान् मध्यरात्रि के पश्चात् आकाश के अरुण होने तक, खड्गधारी जनार्दन रात्रि के अन्तिम प्रहर में, और दामोदर प्रातःकाल में मेरी रक्षा करें — जबकि काल-रूप भगवान् विश्वेश्वर दिन और रात की सन्धियों में रक्षा करें (श्लोक 20-22)। प्रार्थना सिखाती है कि दिन या रात का कोई क्षण भगवान् की रक्षक उपस्थिति से बाहर नहीं छूटता।

भगवान् के अस्त्र

अब भक्त भगवान् के अपने अस्त्रों को जीवन्त रक्षकों के रूप में आह्वान करता है। प्रलय की अग्नि के समान प्रज्वलित सुदर्शन चक्र शत्रु-सेनाओं को भस्म कर दे; वज्र के समान घातक गदा राक्षसों और दुष्ट प्रेतों को चूर कर दे; नन्दक तलवार और सौ चन्द्रों वाली ढाल दुष्टों की आँखें अन्धी कर दें; शंख अपनी भयंकर गर्जना से प्रत्येक पिशाच और दुष्ट-दृष्टि प्रेत को भगा दे (श्लोक 23-26)। प्रत्येक दिशा से — धूमकेतुओं से, मनुष्यों और सरीसृपों और पशुओं से, प्रेतों से और यहाँ तक कि हमारे अपने पापों से — भगवान् के नामों के मात्र उच्चारण से समस्त भय नष्ट हो जाए (श्लोक 27-28)।



भगवान् का प्रज्वलित सुदर्शन चक्र, प्रलय की अग्नि के समान तेजस्वी, भक्त को संकट में डालने वाली प्रत्येक शत्रु और दुष्ट शक्ति को भस्म करने के लिए आह्वान किया जाता है (श्लोक 22-26)।

एक भगवान् जो सब कुछ हैं

प्रत्येक विशेष रूप से ऊपर उठकर, प्रार्थना पहले भगवान् के पार्षदों की ओर मुड़ती है: गरुड, विष्णु के परम बलशाली वाहन जो स्वयं मूर्तिमान् वेद हैं, और विष्वक्सेन, भगवान् के प्रमुख पार्षद, अपने नामों से ही हमारे प्रत्येक संकट को दूर करें (श्लोक 29)। तत्पश्चात् वह अपने सत्य तक पहुँचती है: भगवान् ही अकेले वह सब कुछ हैं जो सरूप और अरूप है, और उसी सत्य से हमारे समस्त कष्ट समाप्त हों। जैसे एक अभेद भगवान्, अपनी ही सृजन-शक्ति से, अपनी अनेक शक्तियों और रूपों और नामों और अस्त्रों को धारण करते हैं, वैसे ही वे सर्वव्यापी श्रीहरि अपने समस्त प्राकट्यों द्वारा, प्रत्येक स्थान और काल में, हमारी रक्षा करें (श्लोक 30-33)।

यहाँ कवच अपना गहनतम रहस्य उद्घाटित करता है, और इसी में यह कारण छिपा है कि ऐसी प्रार्थना हमारी रक्षा कर ही सकती है। भगवान् के पवित्र नाम, उनके दिव्य रूप, उनके गुण, उनका वाहन, और यहाँ तक कि उनके हाथों के अस्त्र — ये बाहर से उनकी सेवा करने वाली पृथक् वस्तुएँ नहीं हैं, अपितु स्वरूप से उनसे पूर्णतः अभिन्न हैं, अपने तत्त्व में चेतन हैं, और प्रत्येक आत्मा की रक्षा हेतु उनकी पूर्ण शक्ति धारण करते हैं (श्लोक 30-33)। अतः चक्र, शंख, या नृसिंह के नाम को पुकारना कोई अन्धविश्वास या मात्र बाह्य कर्मकाण्ड नहीं, अपितु स्वयं परम पुरुष से साक्षात् सम्पर्क है, जो अपने नाम में उतने ही पूर्ण रूप से वास करते हैं जितने अपने रूप में। इसी से जो भक्त इस विविधता में एकत्व देखता है वह भगवान् को सर्वत्र पहले से ही उपस्थित पाता है, और इसी से उनके नाम का एक निष्कपट उच्चारण भी उपासक को उसी शरण में स्थापित कर देता है जो सम्पूर्ण जप किए गए कवच से मिलती है।

अन्ततः भक्त भगवान् नृसिंह का आह्वान करता है कि वे सब ओर तथा प्रत्येक कोने में, ऊर्ध्व-अधः, अन्तर्-बाह्य उसकी रक्षा करें — अपने सिंहनाद से समस्त भय दूर करते और अपने तेज से अन्य समस्त तेजों को ढँकते हुए (श्लोक 34)।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता-

दन्तर्बहिर्भगवान्नारसिंहः ।

प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन

स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ॥ ३४ ॥

*vidikṣu dikṣūrdhvam adhaḥ samantād antar bahir bhagavān nārasimhaḥ prahāpayal loka-
bhayaṁ svanena sva-tejasā grasta-samasta-tejāḥ*

अर्थ: भगवान् नृसिंह मुझे समस्त दिशाओं और कोनों में, ऊपर और नीचे, भीतर और बाहर रक्षा करें, अपनी गर्जना से समस्त भय दूर करते और अपने तेज से प्रत्येक अन्य ज्योति को आच्छादित करते हुए। (स्कन्ध 6, अध्याय 8, श्लोक 34)



नारायण-कवच से सुरक्षित होकर, सहस्राक्ष इन्द्र असुर-सेनाओं को जीतते हैं और तीनों लोकों का आधिपत्य पुनः प्राप्त करते हैं (श्लोक 42)।

प्रार्थना की शक्ति

विश्वरूप कवच के फलों से समापन करते हैं। इस कवच का धारक जिसे भी आँखों से देखे या चरणों से स्पर्श करे, वह तत्काल समस्त भय से मुक्त हो जाता है; कोई राजा, चोर, दुष्ट प्रेत या हिंसक पशु उसे नहीं पकड़ सकता जिसका मन इस पवित्र प्रार्थना में स्थिर है (श्लोक 35-37)। इसकी शक्ति दिखाने के लिए वे कुशिक-वंश के एक ब्राह्मण की कथा कहते हैं, जिसने इस प्रार्थना में लीन होकर एक मरुस्थल में अपना शरीर त्यागा; और गन्धर्वराज चित्ररथ की, जिसका विमान उस स्थान के ऊपर से उड़ते समय सिर के बल गिर पड़ा, जब तक कि वालखिल्य ऋषियों की सम्मति से, उसने ब्राह्मण की अस्थियाँ सरस्वती में प्रवाहित नहीं कीं और प्रार्थना की शक्ति पर आश्चर्यचकित होकर लौट नहीं गया (श्लोक 38-40)। श्रीशुकदेव जोड़ते हैं कि समस्त प्राणी उसके समक्ष नमन करते हैं जो संकट के क्षण में इस प्रार्थना को सुनता और उस पर मन एकाग्र करता है, और कि विश्वरूप से इसे सीखकर इन्द्र ने निश्चित रूप से असुरों को जीता और तीनों लोकों के आधिपत्य का उपभोग किया (श्लोक 41-42)।

एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः ।

त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान् ॥ ४२ ॥

etāṁ vidyām adhigato viśvarūpāc chatakratuḥ trailokya-lakṣmīṁ bubhuje vinirjitya mṛdhe 'surān

अर्थ: विश्वरूप से यह पवित्र विद्या प्राप्त करके, सौ यज्ञों के कर्ता इन्द्र ने युद्ध में असुरों को जीता और तीनों लोकों के वैभव का उपभोग किया।
(स्कन्ध 6, अध्याय 8, श्लोक 42)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् का नाम ही सच्चा कवच है। कवच अपनी सुरक्षा शस्त्रों या शक्ति पर नहीं, अपितु परमेश्वर के नामों, रूपों और स्मरण पर रखता है — आत्मा की सबसे निश्चित शरण (श्लोक 1-2, 35)।
2. प्रत्येक अवतार एक शरण है। अपने प्रत्येक अवतार में — मत्स्य, वामन, नृसिंह, वराह, राम, कल्कि आदि — भगवान् एक विशेष आवश्यकता और संकट का समाधान करते हैं, यह सिखाते हुए कि कोई परिस्थिति उनकी रक्षक पहुँच से परे नहीं (श्लोक 13-19)।
3. कोई प्रहर उनकी देखभाल से बाहर नहीं। प्रार्थना दिन और रात के प्रत्येक विभाग को आवृत करती है, भक्त को स्मरण कराते हुए कि भगवान् की उपस्थिति न कभी सोती है, न कभी जाती है (श्लोक 20-22)।
4. तैयारी प्रार्थना को पवित्र करती है। रक्षा का आह्वान करने से पूर्व, भक्त शरीर और मन को पवित्र करता है, यह दिखाते हुए कि सच्ची शरण स्वयं को पूर्णतः भगवान् की ओर मोड़ने से आरम्भ होती है (श्लोक 3-11)।
5. समस्त भय एक भगवान् में समाप्त होता है। प्रत्येक रूप और अस्त्र के नीचे यह एक सत्य स्थित है कि भगवान् ही अकेले वह सब कुछ हैं जो विद्यमान है — और उस सत्य में विश्राम करते हुए, हृदय प्रत्येक भय से मुक्त हो जाता है (श्लोक 31-34)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

नारायण-कवच, अपने हृदय में, इस विषय की एक शिक्षा है कि हम अपना विश्वास कहाँ रखें। हम अपने जीवन का अधिकांश छोटे-छोटे कवच बनाने में बिताते हैं — धन के, सतर्कता के, प्रभाव के — और भागवत सामान्य विवेक की अवहेलना नहीं करता। किन्तु वह मौन रूप से बल देता है कि कोई सांसारिक ढाल सर्वत्र नहीं पहुँचती: न जल और वायु और वन में, न रात्रि के प्रत्येक प्रहर में, न उन अदृश्य भयों में जो हमारा पीछा करते हैं, न हमारे अपने हृदयों के पापों में। केवल भगवान् की उपस्थिति ही इन सबको एक साथ आवृत करती है। भक्त को जो प्रेरित करता है वह जादुई सुरक्षा का वचन नहीं, अपितु वह दृष्टि है जो प्रार्थना खोलती है — एक ऐसा संसार जिसमें प्रत्येक तत्व, प्रत्येक दिशा, प्रत्येक क्षण पहले से ही भगवान् द्वारा किसी न किसी रूप में बसा हुआ है, जिससे सचमुच कहीं भी हम उनकी देखभाल से परे नहीं जा सकते। ऐसी प्रार्थना का जप बाहर से रक्षा बुलाना कम है और उस शरण का स्मरण अधिक है जो सदैव वहीं थी। और इसका गहनतम शब्द सबसे सरल है: कि भगवान् ही अकेले वह सब कुछ हैं जो है, और उनमें विश्राम करते हुए, भयभीत हृदय शान्त हो जाता है।

एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज, स्मरण का एक छोटा कवच बनाएँ। अपने दिन के आरम्भ में, रुककर भगवान् का पवित्र नाम अपने हृदय में बुलाएँ, आने वाले प्रहरों को उन्हें सौंपते हुए — अपने आने-जाने को, अपने कार्य और विश्राम को। जब भय या चिन्ता का कोई क्षण उठे, तो पहले चिन्ता की ओर मुड़ने के स्थान पर, मौन रूप से भगवान् का नाम दोहराएँ और स्मरण करें कि उनकी उपस्थिति आपको भीतर और बाहर, ऊपर और नीचे घेरे हुए है। इसका भाव जीने के लिए आपको सम्पूर्ण कवच का जप करने की आवश्यकता नहीं; विश्वास से अर्पित एक ही निष्कपट स्मरण आपको उसी रक्षक शरण के अधीन रखता है जिसने युद्ध में इन्द्र की रक्षा की।

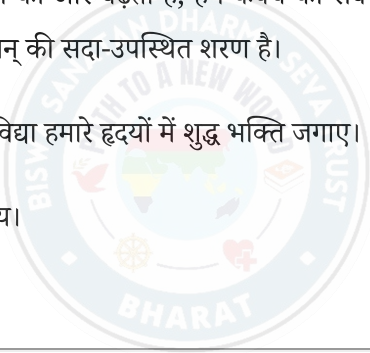
उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का आठवाँ अध्याय हमें नारायण-कवच देता है, भगवान् के अपने नामों और रूपों का कवच। विश्वरूप द्वारा इन्द्र को सिखाया गया और श्रीशुकदेव द्वारा परीक्षित को सुनाया गया, यह भक्त को शरीर और मन में तैयार करता है और फिर भगवान् को उनके प्रत्येक अवतार में प्रत्येक स्थान, प्रत्येक प्रहर और प्रत्येक संकट की रक्षा हेतु आह्वान करता है, जब तक कि समस्त भय इस एक सत्य में विलीन न हो जाए कि भगवान् ही अकेले सब कुछ हैं। इसकी शक्ति इन्द्र की निश्चित विजय में और कुशिक ब्राह्मण की अस्थियों के आश्चर्य में दिखाई जाती है, और इसका वचन हम तक पहुँचता है: कि जो भी इस पवित्र प्रार्थना पर मन स्थिर करता है वह भय से मुक्त हो जाता है। जैसे-जैसे यह स्कन्ध अगले अध्याय में वृत्र के साथ महान् संग्राम की ओर बढ़ता है, हम कवच का सबसे निश्चित पाठ साथ ले चलते हैं — कि हमारी सच्ची रक्षा कभी हमारी अपनी शक्ति नहीं, अपितु भगवान् की सदा-उपस्थित शरण है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



संदर्भ तथा साभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, अष्टम प्रवचन।
- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-6-chapter-8-narayana-kavaca-shield-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

